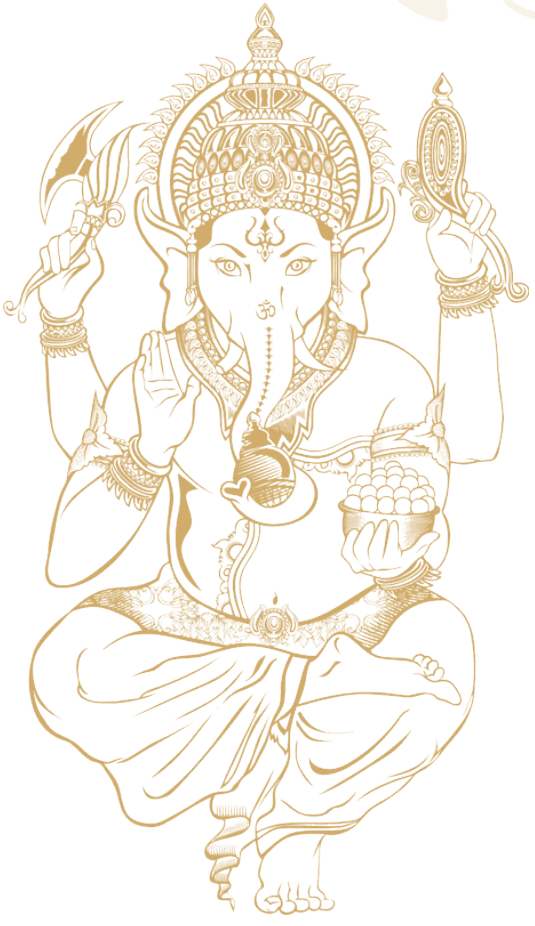

Mr.G

19 Dec 2025

12:15 AM

Bhilwara

Model: Baby-Horoscope **Order No: 120696201**

तिथि 19/12/2025 **समय** 00:15:00 **वार** शुक्रवार **स्थान** Bhilwara **चित्रपक्षीय अयनांश** : 24:13:16
अक्षांश 25:23:00 उत्तर **रेखांश** 74:39:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:31:24 घंटे

पंचांग

साम्पातिक काल	05:34:07 घं
वेलान्तर	00:02:54 घं
सूर्योदय	07:11:30 घं
सूर्यास्त	17:44:49 घं
चैत्रादि संवत	2082
शक संवत	1947
मास	पौष
पक्ष	कृष्ण
तिथि	14
नक्षत्र	ज्येष्ठा
योग	शूल
करण	शकुनि

अवकहड़ा चक्र

गण	राक्षस
योनि	मृग
नाड़ी	आद्य
वर्ण	विप्र
वश्य	कीटक
वर्ग	सर्प
युँजा	अन्त्य
हंसक	जल
जन्म नामाक्षर	नो-नोनी
पाया(रा.-न.)	लौह-ताम्र
होरा	शनि
चौघड़िया	उद्वेग

विंशोत्तरी

बुध 14वर्ष 4मा 16दि

बुध

19/12/2025
05/05/2040

	19/12/2025
केतु	29/09/2026
शुक्र	30/07/2029
सूर्य	05/06/2030
चन्द्र	05/11/2031
मंगल	01/11/2032
राहु	21/05/2035
गुरु	26/08/2037
शनि	05/05/2040

योगिनी

भद्रिका 4वर्ष 2मा 22दि

भद्रिका

19/12/2025
12/03/2030

	19/12/2025
उल्का	21/09/2026
सिद्धा	11/09/2027
संकटा	21/10/2028
मंगला	11/12/2028
पिंगला	22/03/2029
धान्या	21/08/2029
भ्रामरी	12/03/2030

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			29:56:05	सिंह	उ०फाल्गुनी	1	सूर्य	राहु	---	0:00			
सूर्य			02:52:50	धनु	मूल	1	केतु	शुक्र	मित्र राशि	0.91	ज्ञाति	पितृ	सम्पत
चंद्र			18:43:22	वृश्चि	ज्येष्ठा	1	बुध	केतु	नीच राशि	1.35	भ्रातृ	मातृ	जन्म
मंगल		अ	08:23:52	धनु	मूल	3	केतु	गुरु	मित्र राशि	1.15	पुत्र	भ्रातृ	सम्पत
बुध			14:53:56	वृश्चि	अनुराधा	4	शनि	गुरु	सम राशि	1.08	मातृ	ज्ञाति	अतिमित्र
गुरु	व		28:44:49	मिथु	पुनर्वसु	3	गुरु	शुक्र	शत्रु राशि	1.15	आत्मा	धन	मित्र
शुक्र		अ	28:20:52	वृश्चि	ज्येष्ठा	4	बुध	शनि	सम राशि	1.36	अमात्य	कलत्र	जन्म
शनि			01:18:59	मीन	पू०भाद्रपद	4	गुरु	मंगल	सम राशि	1.14	कलत्र	आयु	मित्र
राहु	व		18:01:16	कुंभ	शतभिषा	4	राहु	सूर्य	मित्र राशि		---	ज्ञान	वध
केतु	व		18:01:16	सिंह	पू०फाल्गुनी	2	शुक्र	मंगल	शत्रु राशि		---	मोक्ष	विपत

लग्न-चलित

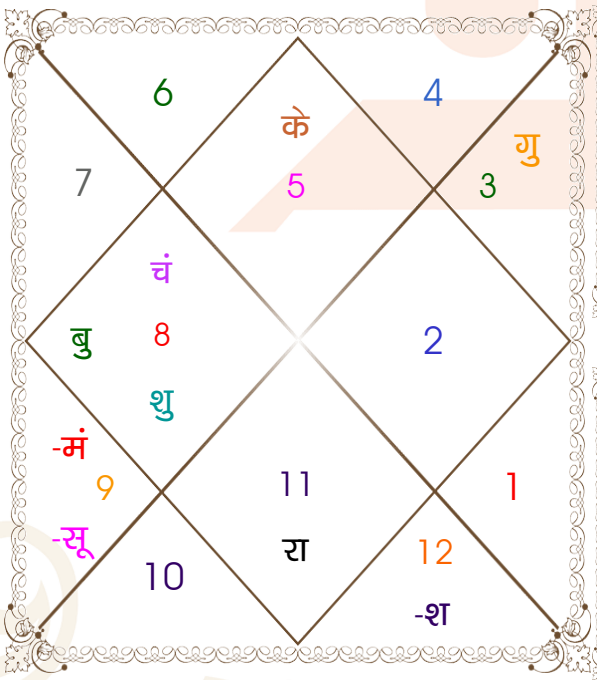

चन्द्र कुंडली

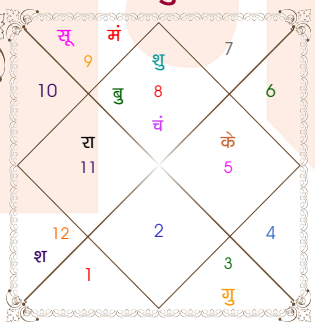

नवमांश कुंडली

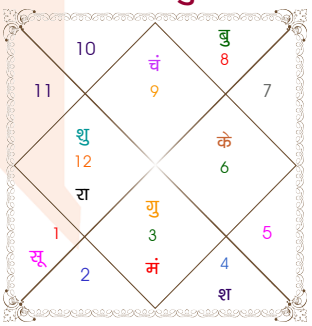

सर्वाष्टकवर्ग

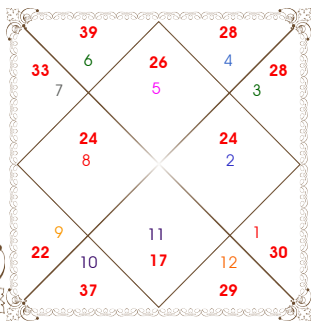

दशमांश कुंडली

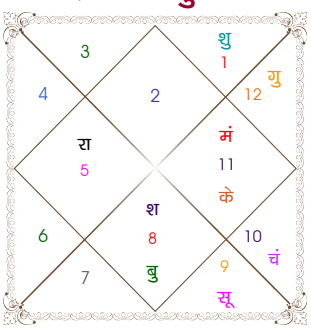

नक्षत्रफल

आप ज्येष्ठा नक्षत्र के प्रथम चरण में उत्पन्न हुई हैं। अतः आपकी जन्मराशि वृश्चिक तथा राशि स्वामी मंगल होगा। नक्षत्र के अनुसार आपका वर्ण विप्र, वर्ग सर्प, गण राक्षस, योनि मृग तथा नाड़ी आद्य होगी। नक्षत्र के प्रथम चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रारम्भ "नो" या "नौ" अक्षर से होगा।

आप गण्डमूल नक्षत्र में उत्पन्न हुई हैं। अतः इस नक्षत्र के प्रथम चरण में उत्पन्न होने के कारण जातक के बड़े भाई को अरिष्ट होता है। अतः जन्म समय में गण्डमूल नक्षत्र की विधि पूर्वक किसी योग्य विद्वान के द्वारा शान्ति करा लेनी चाहिए। इसके लिए नक्षत्र के कम से कम 28000 जप सम्पन्न करवाने चाहिए तथा 27 दिन बाद पुनः जब यह नक्षत्र आवे तो जपे हुए मंत्रों के दशांश का हवन करना चाहिए। इस प्रकार शास्त्रीय विधि से जप तथा हवनादि करने से इसका अनिष्ट प्रभाव हीन हो जाता है तथा सम्बन्धित व्यक्ति सुखी रहता है।

मंत्र- ऊं मातेव पुत्रं पृथ्वीं पुरीष्यमग्निं स्वेवोनावभारूयतां।
विस्वैर्दिवैर्ऋतुभिः सविद्वानः प्रजापतिर्विश्वकर्मा विमुत्रचतु।।
जातकाभरणम्

अर्थात् ज्येष्ठा नक्षत्र में उत्पन्न जातक कान्तिमान, यशस्वी, सर्वथा उत्सव करने वाला, शत्रुओं को पराजित करने वाला, अनेक कलाओं में निपुण तथा बहुत सम्पति का भोगी होता है।

आप अपने क्षेत्र में प्रसिद्धि प्राप्त महिला होंगी तथा दूर दूर तक लोग आपके विषय में ज्ञान रखेंगे। आपका सौन्दर्य मनोहरी रहेगा तथा शरीर में कान्ति एवं लावण्यता की बहुलता रहेगी। विविध प्रकार के धन वैभव से आप सर्वथा सुसम्पन्न रहेंगी तथा प्रसन्नतापूर्वक जीवन में इसका उपभोग करेंगी। आप एक धनवान तथा सामर्थ्यशाली महिला रहेंगी तथा जीवन के प्रत्येक कार्य को करने में सक्षम रहेंगी। आप एक पराक्रमी महिला रहेंगी तथा समाज में सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे। समाज में आपकी प्रतिष्ठा में नित्य वृद्धि होती रहेगी तथा आप एक लोकप्रिय तथा सम्मानित महिला समझी जाएंगी। आपमें नेतृत्व तथा वक्तृत्व शक्ति की प्रवलता रहेगी तथा से सबको अपने चतुराई पूर्ण भाषण से प्रभावित करेंगे।

सत्कीर्तिकान्ति विभुतासमेतो वितान्वितोत्यन्तलसन्प्रतापः।
श्रेष्ठः प्रतिष्ठो वदतां वरिष्ठो ज्येष्ठोत्पन्नः स्यात्पुरूषोविशेषात्।।
जातका भरणम्

अर्थात् ज्येष्ठा नक्षत्र का जातक उत्तम कोटि के यश ओर प्रभुता से युत, धनी, सत्प्रतापी, नेता, लोकमान्य तथा उत्तम वक्ता होता है।

कभी कभी आप अकारण ही अधिक मात्रा में क्रोध का प्रदर्शन करेंगी जिससे आप आर्थिक हानि या मानसिक संताप प्राप्त करेंगी। धर्म एवं ईश्वर के प्रति आपके मन में आस्था

रहेगी तथा श्रद्धा पूर्वक इसका अनुपालन करने के लिए हमेशा यत्न शील रहेंगी।

ज्येष्ठायामतिकोपवान परवधूसक्तो विभुधार्मिकः।।
जातकपरिजातः

अर्थात् ज्येष्ठा नक्षत्र का जातक अत्याधिक कोधी, अन्य स्त्रियों में आसक्त, सामर्थ्यवान तथा धार्मिक होता है।

आपकी मित्रता का क्षेत्र अत्यन्त ही विस्तृत रहेगा तथा मित्रवर्ग में आप मुख्य तथा लोकप्रिय रहेंगी। आप स्वभाव से भी सन्तोषी होंगी तथा अपनी उपलब्धि पर ही सन्तोष रखेंगी। अनावश्यक इच्छाएं आपके मन में कम ही रहेंगी। लेकिन क्रोध पर आप का नियंत्रण अल्प ही रहेगा।

ज्येष्ठासु बहुमित्रः सन्तुष्टो धर्मकृत्प्रचुरकोधः।
बृहज्जातकम्

अर्थात् ज्येष्ठा नक्षत्र में उत्पन्न जातक बहुत मित्रों वाला, सन्तोषी, धर्माचरणकर्ता तथा क्रोधी होता है।

आपका स्वभाव से ही लेखन कार्य के प्रति रुझान रहेगा तथा कवितादि लिखने में आप सफल रहेंगी। सहनशीलता के भाव से भी आप युक्त रहेंगी तथा दुःख सुख को समान रूप से समझेंगी। आप अत्यन्त ही चतुर महिला होंगी तथा अपने समस्त सांसारिक कार्यकलापों को चतुराई से ही सम्पन्न करेंगी। आप निम्न श्रेणी के लोगों के लिए हमेशा अत्यन्त ही पूजनीय तथा सम्माननीय रहेंगी तथा इनके मध्य काफी लोकप्रियता भी अर्जित करेंगी।

बहुमित्र प्रधानश्च कविर्दान्तो विचक्षणः।
ज्येष्ठाजातो धर्मरतो जायते शूद्र पूजितः।।
मानसागरी

अर्थात् ज्येष्ठा नक्षत्र में उत्पन्न जातक अधिकांश मित्रों के कारण स्वयं प्रधान, काव्यकर्ता, सहनशील, परम चतुर, धर्म में रत एवं शूद्रों द्वारा पूजित होता है।

आप लौहपाद में उत्पन्न हुई हैं। यद्यपि लौहपाद में उत्पन्न जातक प्रायः रोगी धनाभाव से व्याकुल, सुखसंसाधनों से हीन तथा अन्य प्रकार से जीवन में दुःख प्राप्त करता है। परन्तु आपकी कुडंली में चन्द्रमा शुभ राशि में स्थित है। अतः आपको अशुभ फलों की अपेक्षा शुभ फलों की ही अधिक प्राप्ति होगी। आप जलोत्पन्न पदार्थो से नित्य लाभार्जन करने में सफल रहेंगी। आप धनवान महिला होंगी तथा चल अचल सम्पतियों की स्वामिनी होंगी। विविध प्रकार के नवीन परिधानों से आप हमेशा सुशोभित रहेंगी तथा जीवन में वाहन सुख को भी प्राप्त करेंगी। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा रहेगी। बन्धु एवं मित्र वर्ग से आपको उचित सहायता तथा सहयोग की प्राप्ति होती रहेगी। माता की आप प्रिय रहेंगी तथा

आप भी उनको पूर्ण सम्मान प्रदान करेंगी। जीवन में सर्वप्रकार के भौतिक सुखसंसाधनों से आप युक्त रहेंगी तथा सुखपूर्वक इनका उपभोग करेंगी। साथ ही दानशीलता का भाव भी आपके मन में सदैव विद्यमान रहेगा। इसके अतिरिक्त जलक्रीड़ा में भी आपकी हार्दिक रूचि रहेगी।

वृश्चिक राशि में उत्पन्न होने के कारण आपका वक्षस्थल विस्तृत तथा आखें बड़ी एवं सुन्दर होगी। साथ ही शारीरिक वर्ण में अल्प श्यामलता का समावेश भी हो सकता है। आप के हाथ या पैर में मत्स्य का चिन्ह भी अंकित हो सकता है। परन्तु हाथ की रेखाएं वज्र तथा पक्षी के आकार की रहेंगी। माता पिता तथा गुरूजनों से आपके संबंध उच्छे रहेंगे। अतः इनसे आपको स्नेह तथा सहयोग की प्राप्ति भी उपलब्ध होती रहेंगी। बचपन में आप काफी मात्रा में रोग ग्रस्त रहेंगी। आपकी बुद्धि अत्यन्त तीव्र होगी तथा चतुरता का भाव भी इसमें विद्यमान रहेगा। अतः अपने बुद्धि चातुर्य तथा परिश्रम से राज्य में कोई उच्च पद प्राप्त कर सकेंगी। क्रूर तथा कठोर कार्यों को करने में रूचिशील होने के कारण आप सेना, पुलिस या सर्जरी विभाग में कार्यरत हो सकेगी। आपकी प्रवृति कभी कभी दुष्टता से भी युक्त रहेंगी अतः अन्य जन इससे कष्ट प्राप्त करेंगे।

पृथुलनयनवक्षा वृहज्जङ्घोरूजानुः।
जनकगुरूवियुक्तः शैशवे व्याधितश्च।।
नरपति कुलपूज्यः पिंगलः क्रूरचेष्टो।
झषकुलिशखगाङ्कश्च छन्नपापोळलिजातः।।
बृहज्जातकम्

आपका मस्तक तथा उदर भी दीर्घ आकार का होगा। आपके मन में लोभ की भावना भी विद्यमान रहेगी तथा अन्य जनों की वस्तुओं के प्रति आपके मन में लोलुपता के भाव की उत्पति होगी। आपका शरीर लावण्यता से युक्त रहेगा। धर्म तथा ईश्वर के प्रति भी आपकी श्रद्धा रहेगी। समय के अनुसार चोरी आदि करने में भी आप उद्यत रहेंगी। आपकी ठोड़ी तथा नाखून में चोट आदि का निशान रहेगा। धन तथा वैभव का आपके पास अभाव नहीं रहेगा। कई कार्यों को करने में आप व्यस्त रहेंगी। बन्धुओं से भी आपको सहयोग की प्राप्ति हो सकेगी। साथ ही आप एक पराक्रमी महिला होंगी तथा समाज में सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे। आप में उग्रता का भाव भी रहेगा तथा सरकारी मुकददमे या अन्य कारण से आप सरकार के द्वारा आर्थिक दण्ड प्राप्त करेंगी। इसके अतिरिक्त अन्य जनों के प्रति भी आप के मन में प्रेमभा रहगो।

लुब्धो वृतोरूजङ्घः कठिनतरर्तनुर्नास्तिकः क्रूरचेष्टः।
चौरो बालो रूगार्तो हतचिबुकनखश्चारूनेत्रः समृद्धः।।
कर्मोद्युक्तः प्रदक्षः परयुवतिरतो बन्धुहीनः प्रमत्तः।
चण्डराजो हृतस्वः पृथुजठरशिरा कीटभे शीतरश्मौ।।
सारावली

आप एक धनाढ्य महिला होंगी तथा अपने विस्तृत परिवार के अतिरिक्त अन्य जनों को भी सुख प्रदान करेंगी। पुरूषों के संबंध में आप अत्यन्त ही सौभाग्यशाली रहेंगी तथा इनसे

पूर्ण सहयोग सम्मान तथा लाभार्जन करने में समर्थ रहेंगी। सरकार की सेवा में भी आप नियुक्त रहेंगी। लेकिन आप हमेशा दूसरे के धन को स्वयं प्राप्त करने के लिए लालयित रहेंगी तथा सम्पूर्ण जीवन इसके लिए प्रयत्न भी करती रहेंगी। आप की दृढ़मति रहेगी एवं किसी भी कार्य को दृढ़ ता से पूर्ण करेंगी कार्यारम्भ करके मध्य में छोड़ना आपकी प्रवृति के विपरीत होगा। आप नित्य अपने उद्यमों में भी रत रहेंगी तथा साहस एवं निर्भयता से अपने कार्यों को सम्पन्न करेंगी।

बहुधनजनभोगी स्त्रीसु सौभाग्ययुक्तः।
पिथुनयति मनस्वी राजसेवानुरक्तः।।
अभिलषति परार्थं नित्यमुद्योगयुक्तो।
दृढ़मतिरतिशूरो वृश्चिको यस्य राशिः।।
जातकदीपिका

आप यदा कदा जुआ आदि खेलने के लिए भी उद्यत होंगी। लेकिन इससे आपको आर्थिक रूप से हानि ही अधिक होगी। आपके स्वभाव में क्रोधाधिक्य के कारण आप अन्य जनों से विवाद आदि करने में भी तत्पर रहेंगी। आप जीवन में बहुत ही कम शान्ति की अनुभूति कर सकेंगी अन्यथा अपने को अशान्त ही महसूस करेंगी।

शशधरे हि सरीसृपगे नरो नृपदुरोदरजातधनक्षयः।
कलिरूचिर्विबलः खलमानसः कृशमनाः शमनापहतो भवेत।।
जातकाभरणम्

आप प्रारम्भ से ही घर से अन्यत्र निवास करेंगी तथा घूमने फिरने में भी आपकी पूर्ण रूचि रहेगी। आप स्वभाव से अभिमानी प्रवृति का भी प्रदर्शन करेंगी। अपने संबंधियों तथा बन्धुवर्ग के प्रति आपके मन में स्नेह तथा अपनत्व का भाव रहेगा। साथ ही साहस पूर्वक धनार्जन करने में आप हमेशा सफल रहेंगी।

बालप्रवासी क्रूरात्मा शूरः पिंगल लोचनः।
परदाररतो मानी निष्ठुरः स्वजने भवेत।।
साहसप्राप्तलक्ष्मीको जनन्यामपि दुष्ट धीः।
धूर्तश्चौरकलारम्भी वृश्चिके जायते नरः।।
मानसागरी

राक्षस गण में पैदा होने के कारण आप कभी कभी व्यर्थ तथा अधिक बोलने वाली होंगी। आपका मन भी कठोरता से युक्त रहेगा तथा कोमल भावनाओं का इसमें न्यूनता रहेंगी। परन्तु आप एक साहसी तथा निर्भीक महिला होंगी एवं साहसपूर्वक अपने समस्त कार्यकलापों को सम्पन्न करेंगी। आपका स्वभाव क्रोधी भी होगा तथा अकारण ही छोटी छोटी बातों पर आप उत्तेजित हो जाएंगी। आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा बल का आप में अभाव नहीं होगा। अतः अन्य लोगों से विवाद करने की प्रवृति भी आप में विद्यमान रहेगी। साथ ही समाज में अधिकांश जनों से आपका विरोध भाव चलता रहेगा। अतः अन्यजनों से आपको विनम्रता का

व्यवहार करना चहिए।

आप जीवन में उन्माद तथा प्रमेह रोग से भी व्याकुल रह सकती हैं। आपकी शारीरिक सुन्दरता मध्यम तथा कभी कभी आपकी वाणी अत्यन्त ही कठोर रहेगी जो श्रोता को कष्ट प्रदान करेंगी। अतः अपने सम्भाषण में आपको मधुर शब्दों का प्रयोग करना चाहिए।

अनल्पजल्पश्च कठोरचित्तः स्यात्साहसी क्रोधपरोद्धतश्च।
दुःशीलवृतः कलीकृत्वलीमान रक्षोगणोत्पन्नरो विरोधी।।
जातकभरणम्

अर्थात् राक्षस गण में उत्पन्न जातक व्यर्थ बोलने वाला, कठोर, साहसी, अकारण ही क्रोधित होने वाला, नीच प्रकृति से युक्त, झगडू, बलवान तथा अन्य लोगों का विरोधी होता है।

मृग योनि में जन्म होने के कारण आपकी प्रवृति स्वच्छन्द रहेगी तथा स्वच्छन्दता पूर्वक अपने समस्त कार्यकलापों को करने की इच्छा करेंगी। आप चित से अत्यन्त ही शान्त रहेंगी तथा उपद्रवी भावना का आप में सर्वथा अभाव रहेगा। साथ ही उत्तम साधनों के द्वारा आप अपनी आजीविका का अर्जन करेंगी। सत्य के पालन करने के लिए आप हमेशा प्रयत्नशील रहेंगी तथा अपने बन्धु एवं संबंधियों के मध्य आप अत्यन्त ही प्रिय रहेंगी। सभी लोग आपको हृदय से चाहेंगे। ईश्वर तथा धर्म में भी आपका विश्वास रहेगा तथा नियमपूर्वक धर्मानुपालन में सर्वथा तत्पर रहेंगी। साथ ही आप एक शूरवीर महिला होंगी तथा विवादों आदि में सर्वत्र विजयी रहेंगी।

स्वच्छन्दः शान्तसद्वृतिः सत्यवान स्वजनप्रियः।
धार्मिको रणशूरश्च यो नरो मृगयोनिजः।।
मानसागरी

अर्थात मृग योनि का जातक स्वच्छन्द, शान्त प्रिय, अच्छी प्रकार की जीविका निर्वाह करने वाला एवं युद्ध क्षेत्र में शूरवीर होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति चतुर्थ भाव में स्थित हैं। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं किसी भी प्रकार से शारीरिक व्याकुलता की उनको अनुभूति नहीं होगी। आपके प्रति उनके मन में विशेष स्नेह का भाव रहेगा। आपके परस्पर मधुर संबंध रहेंगे एवं मतभेदों का प्रायः अभाव ही रहेगा। विभिन्न प्रकार की धन सम्पत्ति तथा वाहनादि सुख से वे युक्त रहेंगी तथा आपकी सुख समृद्धि एवं सुखसंसाधनों की प्राप्ति के लिए नित्य आपका आर्थिक तथा अन्य तरफ से सहयोग करती रहेंगी।

आप की भी उनके प्रति असीम निष्ठा एवं आदर का भाव रहेगा। साथ ही जीवन में उनको सर्वप्रकार से सुख प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगी। एवं उनकी आज्ञा का पालन भी नित्य करती रहेंगी। इस प्रकार आप माता के लिए शुभ ही रहेंगी।

आपके जन्म समय में सूर्य पंचम भाव में स्थित है अतः पिता की आप प्रिय रहेंगी

उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा किंचित शारीरिक कष्टानुभूति प्राप्त करते रहेंगे। धनैश्वर्य का उनके पास अभाव नहीं रहेगा एवं जीवन में आपको समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सिद्ध करने के लिए अपना अमूल्य सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही आपको वे वांछित आर्थिक सहयोग भी देते रहेंगे जिससे आप को कोई भी कष्ट न हो।

आप भी उनके प्रति पूर्ण आदर का भाव रखेंगी तथा उनकी आज्ञा का पालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा आप के मध्य आपसी मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे संबंधों में तनिक तनाव तथा कटुता उत्पन्न होगी लेकिन कुछ समय के उपरान्त सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। इसके अतिरिक्त आप उनकी सुखसुविधा का पूर्ण ध्यान रखेंगी तथा आवश्यकतानुसार उन्हें आर्थिक या अन्य रूप से अपना सहयोग प्रदान करेंगी।

आपके जन्म समय में मंगल पंचम भाव में स्थित है अतः भाई बहिनों का आप मध्यम रूप से सुख प्राप्त करेंगी। उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु कभी कभी शारीरिक अस्वस्थता भी रहेगी। धन सम्पत्ति से वे युक्त रहेंगे। जीवन में वे आपको सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण क्षेत्रों में अपना योगदान प्रदान करेंगे तथा सुख दुःख में आर्थिक तथा अन्य प्रकार की सहायता देंगे। इसके साथ ही शिक्षा संबंधी कार्यों में भी आप उनका वांछित सहयोग प्राप्त करेंगी।

आपके हृदय में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह का भाव रहेगा तथा आपसी संबंध भी प्रायः मधुर ही रहेंगे परन्तु यदा कदा आपसी सैद्धान्तिक मतभेदों से संबंधों में कटुता या तनाव भी उत्पन्न होंगे परन्तु कुछ समय बाद सब कुछ स्वतः ही सामान्य हो जाएगा। आप सुख दुःख में हमेशा उनका सहयोग करेंगी एवं अपनी ओर से कभी भी उन्हें किसी भी प्रकार की कष्टानुभूति नहीं होने देंगी। इसके अतिरिक्त अवसरानुकूल आप उन्हें आर्थिक सहायता भी प्रदान करेंगी। इस प्रकार आप मध्यम रूप से एक दूसरे का सुख प्राप्त करेंगे।

आपके लिए आश्विन मास, षष्ठी, प्रतिपदा, एकादशी तिथियां, रेवती नक्षत्र, व्यतिपातयोग, गरकरण, शुक्रवार, प्रथम प्रहर तथा धनु राशिस्थ चन्द्रमा हमेशा अशुभ फलदायक रहेंगे। अतः आप 15 सितम्बर से 14 अक्टूबर के मध्य 1,6,11 तिथियों, रेवती नक्षत्र व्यतिपातयोग तथा गरकरण में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रयविक्रयादि अन्य महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही शुक्रवार, प्रथम प्रहर तथा धनु राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित रखें। इन दिनों तथा समय में शारीरिक स्वास्थ्य एवं सुरक्षा के प्रति भी विशेष सावधान रहना चाहिए।

यदि आपके लिए समय अशुभ चल रहा हो मानसिक तथा शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति में बाधाएं तथा अन्य शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य सफल नहीं हो रहे हों तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट देव भगवान शिव की पूजा करनी चाहिए तथा नित्य प्रातः शिवालय जाकर विल्वपत्र अर्पण करने चाहिए। साथ ही सोना, मूंगा, तांबा, लाल वस्त्र, चन्दन, गेहूं, मल्का इत्यादि पदार्थों का दान करना चाहिए। इससे आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी तथा अशुभ प्रभावो में भी न्यूनता होगी। इसके अतिरिक्त मंगल के तांत्रीय मंत्र का

किसी योग्य विद्वान से कम से कम 7000 जप करवाने चाहिए। ऐसा करने से आपके अधिकांश अशुभ प्रभाव समाप्त होंगे तथा लाभमार्ग भी प्रशस्त होंगे।

ॐ क्रां क्रीं क्रों सः भौमाय नमः।
मंत्र- ऊं हुँ शीं भौमाय नमः।